अथवा कृतवाग्द्वारे वंशेऽस्मिन् पूर्वसूरिभिः ।

मणौ वज्रसमुत्कीर्णे सूत्रस्येवास्ति मे गतिः।।4।।

अन्वयः: अथवा पूर्वसूरिभिः कृतवाग्द्वारे अस्मिन् वंशे वज्रसमुत्कीर्णे मणौ सूत्रस्य इव मे गतिः अस्तिः।

अनुवादः: (यद्यपि सूर्यवंश का वर्णन कर पाना मेरे लिए कठिन है तथापि) प्राचीन मनीषियों (वाल्मीकि-आदि कवियों) ने इस (कुल) का वर्णन करके इसमें वाणी का (प्रवेश) का द्वार खोल दिया है। अतः इस कार्य में मेरा प्रवेश (गति) उसी प्रकार संभव हो गया है जिस प्रकार हीरे की सूई से छिदी हुई मणि में धागा आसानी से प्रविष्ट हो जाता है।

टिप्पणियां:

पूर्वसूरिभिः: 'सूरि' का अर्थ है नूतन विचारों का प्रवर्त्तक, कवि। प्राचीन कवियों महर्षि वाल्मीकि आदि के द्वारा।

कृतवाग्द्वारे: वाक् एव द्वारम् वाग्द्वारम् (कर्मधारय), कृतं वाग्द्वारं यस्य सः कृतवाग्द्वारः (बहुव्रीहि), तस्मिन् कृतवाग्द्वारे। 'वंशे' का विशेषण; वह सूर्यवंश जिसका वाणीरूप द्वार वाल्मीकि ने रामायण प्रबंध की रचना करके आने वाले कवियों के लिए खोल दिया है। अर्थात् वह सूर्यवंश जिसमें प्रवेश के लिये वाल्मीकि रामायण काव्यद्वार का कार्य करता है। ठीक यही दशा महर्षि वेदव्यास द्वारा विरचित महाभारत की भी है। उसके माध्यम से मेरे (कालिदास) जैसे मन्द बुद्धि कवि का भी उसमें प्रवेश करना सरल हो गया है।

वज्रसमुत्कीर्णे: वज्रेण समुत्कीर्णः (सम् उपसर्ग+उत् उपसर्ग धातु कृ) वज्रसमुत्कीर्णः (तत्पुरुष), तस्मिन्, वज्रसमुत्कीर्णे। 'मणौ' का विशेषण। वह मणि जिसमें हीरे की कनी से छिद्र कर दिया गया है। मणि बड़ी कठोर होती है। परन्तु जब उसमें छिद्र कर दिया

जाता है तो कोमल धागा भी उसमें आसानी से पिरोया जा सकता है। उसी प्रकार सूर्यवंश की महिमा का वर्णन करना भी कालिदास के लिए अनबिद्ध मणि में धागा डालने के समान बड़ा कठिन कार्य है। परन्तु जैसे छिद्र हो जाने से मणि में धागा पिरोना सरल हो जाता है उसी प्रकार वाल्मीकि द्वारा सूर्यकुल पर रामायण काव्य की रचना कर देने से इस कठिन काम को भी कर देना अब कालिदास के लिए सरल हो गया है। कवि कालिदास की सूर्य कुल के नृपतियों पर काव्य रचना करने की उच्चाभिलाषा अब फलोन्मुखी हो सकती है क्योंकि आदिकवि वाल्मीकि ने रामायण की रचना कर उसके लिए मार्गदर्शन कर दिया है। कालिदास के ये वचन उनकी नम्रता तथा शालीनता के सूचक हैं कि महाकवि की क्षमता होने पर भी उन्हें तनिक भी अभिमान नहीं छू गया है। कहा भी गया है:

विद्या ददाति विनयम्, विनयाद्याति पात्रताम्।

पात्रत्वाद्धनमाप्नोति, धनाद् धर्मस्ततः सुखम्।।

सूत्रस्य- तागे (धागा, डोरी) के (समान)

गतिः- गम् +क्तिन् (प्रवेश)